ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 277-278

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

भारतीय कला में पुनरूत्थान काल व स्वतंत्रता आन्दोलन के पूर्व एवं पश्चात गीता–प्रेस के प्रमुख चित्रकारों की भूमिका

प्रदीप राजौरिया
ललित कला एवं संगीत विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-13.03.2023, Revised-20.03.2023, Accepted-25.03.2023 E-mail: pradeeprajoriya1989@gmail.com

सारांशः ***भारतीय चित्रकला का इतिहास प्राचीन काल से ही समृद्ध रहा है। कला इतिहास का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि चाहें किसी भी काल खण्ड में कोई भी शासक रहा हो, कला के विकास के स्तर पर एक जुटता दिखाई देती है। निश्चित रूप से यही कारण है कि आज भी भारतीय कला का अस्तित्व और उसका महत्व समय के साथ कम नही हुआ है। हम सभी कला विद्यार्थी के तौर पर जानते है कि मुगल सम्राट औरंगजेब की कला के प्रति दृष्टिकोण के कारण कला के विकास की अनवरत परम्परा ने एक दूसरा रूप धारण कर लिया। संरक्षण प्राप्त सिद्धहस्त कलाकारों का एका–एक अपने संरक्षक का संरक्षण का समाप्त हो जाना कलाकारों के जीवकोंपार्जन का विषय बन गया।***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय चित्रकला, प्राचीन काल, कला, विकास, भारतीय कला, मुगल सम्राट, अनवरत परम्परा, राजनैतिक।

मुगल कलाकार दरबार से निश्कासन के बाद नये संरक्षण की तलाश में पहाड़ी राज्यों की ओर कुच कर गये। और किसी तरह जहॉ–तहॉ अपनी कला के द्वारा धनोपार्जन करने लगे। उपरोक्त घटना संभवत पहली ऐसी घटना जान पडती है जिसने कला में शैली के रूप में हो रहे विकास को बाधित किया। उपरोक्त घटना के पूर्व तक कला में भारतीय कला के तत्वों का समावेश दिखाई देता था। पर उपरोक्त घटना के उपरान्त भारतीय कला परम्परा में एक विघटनकारी परिवर्तन आने लगा और कला औपनिवेशिक काल में व्यावहारिक और धनोपार्जन का माध्यम बन कर रह गई। भारतीय कला के तत्व समाप्त हो गये और कम्पनी शैली में केवल विषय–वस्तु भारतीय रह गई। अंग्रेज अधिकारियों ने स्थानीय कलाकारों द्वारा चित्रित जन साधारण विषयकृत चित्रों को क्रय कर अपने वतन अपने मित्रों, परिवार आदि को उपहार के रूप में भेजते, जिससे जन साधारण विषयकृत चित्रों की मॉग बढ़ने लगी तथा इन कलाकारों के लिए कम्पनी के अधिकारी पोषक के रूप में उभरे। इसीलिए इस नवीन विकसीत शैली को कम्पनी शैली के नाम से कला इतिहास में चिन्हित किया गया है। भारत में ईस्ट–इण्ड़िया कम्पनी व्यापार के साथ–साथ अपना राजनैतिक प्रभुत्व तो स्थापित करने ही लगी थी, कला क्षेत्र में भी अपनी प्रभु–सत्ता को स्थापित करने लगे।

18वीं शताब्दी का यह समय वो समय था, जब भारत में विदेशी चित्रकारों मुख्य रूप से ब्रिटिश चित्रकारों की संख्या भारत में बहुत अधिक बढ़ गई। जिनमें टिली कैटल, जार्ज विलीसन, मिस आइजक केथेरीन रीड आदि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। थॉमस डेनियनतथा विलियम डेनियन भी उन प्रमुख कलाकारों में से थे, जिन्होंने लगभग एक दशक (1785–1794 ई0) भारत को अपना ठिकाना बनाया तथा अपने इस प्रवास काल के दौरान यहॉ के नदी किनारे बसे प्रमुख नगरों के टोपोग्राफिक दृश्यांकन किये। सर्वविदित है कि जहॉगीर का जब शासन था तभी लगभग 1600 ई0 में इग्लैण्ड़ में ईस्ट इण्डियॉ की स्थापना हुई। जहॉगीर के समय में ही इग्लैण्ड़ के राजदूत थॉमस अपने साथ पाश्चात्य शैली के उदाहरण भारत लाए और भारत में उसी काल खण्ड से धीरें–धीरें पाश्चात्य प्रभाव बढ़ने लगा।

19वीं शताब्दी के मध्य में कैमरे के प्रयोग ने भी कला को क्षति पहुंचाई। कलाकारों के महत्व पर भी खतरा दिखने लगा था। उपरोक्त घटनाओं से भारतीय कला परम्परा में अंधेरा सा आ गया। साथ ही साथ अंग्रेज अधिकारियों ने यूरोपीय कला के सामने भारतीय कला को कमतर आंकनें का दृष्टिकोण पैदा किया। भारत में क्रमशः मद्रास–1850, कलकत्ता–1854, बम्बई–1857 तथा लाहौर–1875 में चार आर्ट स्कूल की स्थापना कर पाश्चात्य कला पाठ्यक्रम लागु कर भारतीय कला के रीढ़ को कमजोर करने की एक सोची समझी रणनीति अपनाई गई। यह तो सुखद रहा कि विदेशी होते हुए भी ई0 बी0 हैवेल ने उदारता का परिचय देते हुए भारतीय कला को परतंत्र होने से बचाने में अहम भूमिका निभायी। 20 वीं षताब्दी के आरम्भ में अंग्रेज विद्वान, कला–इतिहासकार ई0 बी0 हैवेल के नजरिए ने लगभग दो शताब्दियों तक हेय दृष्टि से देखी जाने वाली भारतीय कला के क्षेत्र में एक नई उर्जा भर कर एक नवीन जागृति पैदा की। मद्रास आर्ट स्कूल से स्थानांतरित होकर आर्ट स्कूल में प्रिंसीपल के पद पर आये कलकत्ता आये ई0 बी0 हैवेल नवागत कला छात्रों के लिए प्रेरक बने।

नवागत कलाकार खुद को दोराहे पर खडा पाकर इस विचार के लिए बाध्य होते थे कि अब कला की प्रेरणा प्राचीन भारतीय परम्परा से ले या पाश्चात्य परम्परा को अपनाएं। ऐसे में ई0 बी0 हैवेल ने भारतीय कला के महत्व को उजागर कर इनकी आंखें खोल दी। अवनीन्द्रनाथ पर इनके विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप अवनीन्द्रनाथ ने इनसे सहयोग लेकर भारतीय कला में पूर्नजागृति की शुरूआत की।

कृष्ण चैत्यन्य के शब्दों में– "पुनजागृति की कांति पश्चिम के खिलाफ थी, समस्त बाह्रय प्रभावों के खिलाफ नहीं।"

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

अब पुनः नवागत कलाकार भारतीय कला निधि अजन्ता, बाघ, मुगल, राजस्थानी आदि कलाओं से प्रेरणा लेने लगे थे। 20 वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में लगभग 1923 में उत्तर–प्रदेश के गोरखपुर जनपद में जयदयाल गोयन्दका की प्रेरणा से गीता प्रेस की स्थापना हुई। गीता प्रेस की भूमिका आज सर्वविदित है। भले ही कला इतिहास के पृष्ठों पर गीता प्रेस के चित्रकारों का नाम मजबूती से न लिया जाता हो, पर इन चित्रकारों के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता। गीता प्रेस से जुड़े कुछ आरम्भिक चित्रकार पुनजागृति के प्रणेता अवनीन्द्रनाथ के षिश्य रहे थे। कल्याण (गीता प्रेस से प्रकाशित होने वाली पत्रिका) में योगदान देने वाले तत्कालीक चित्रकार दत्तात्रेय दामोदर देवलालिकर का नाम प्रमुख है। जिनके बाद के यशस्वी विद्यार्थी एन0 एस0 बेन्द्रे व एम0 एफ0 हुसैन हुए। गीता प्रेस से जुड़े चित्रकार नंदलाल बोस और असित कुमार हल्दार के शिष्य भी थे। इस तरह गीता प्रेस के कलाकारों पर भारतीय पुनर्जागरण कला शैली बंगाल शैली के पुराधाओं का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है।

20वीं शताब्दी में स्वतंत्रता आन्दोलन के पूर्व हम देखते हैं कि बंगाल में पुर्नजागरण कला आन्दोलन एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कला आन्दोलन का रूप ले रहा था। जिससे निश्चित रूप से भारतीय कला इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ा। अवनीन्द्रनाथ के शिष्यत्व पाकर बंगाल शैली को आत्मसात् करते हुए इस आन्दोलन से जुड़े तथा आगे चलकर भारत के अनेक प्रान्तों में कला शिक्षक के रूप में पदासीन हुए तथा इस कला आन्दोलन को राष्ट्रीय कला आन्दोलन के रूप में परिणत करने में अपनी भूमिका निभाई।

वहीं दूसरी ओर स्वतंत्रता आन्दोलन के वर्षो में व स्वतंत्रता पश्चात गीता–प्रेस के चित्रकार बी0 के0 मित्रा, भगवान व जगन्नाथ ने भले ही प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय कला आन्दोलन में भाग न लिया हो, पर उन्होंने चित्र निर्माण में पाश्चात्य शैली का अनुसरण नही किया, बल्कि जलरंग से ही अपनी निजी शैली का विकास किया।

कल्याण पत्रिका में सुप्रसिद्ध चित्रकार एम0वी0 धुरंधर जैसे चित्रकारों के भी चित्र प्रकाशित हुए। आजादी से पूर्व कई वर्षो तक कार्य करने के बाद कल्याण में 1938 में रामचरितमानस पर आधारित वार्षिकांक निकाला। यह अंक विशेष प्रकार के चित्रों से आकर्षक ढंग से अलंकृत था। आजादी और विभाजन के बाद के त्रासदी भरे समय में गीता प्रेस ने लोगों से शान्ति और धैर्य बनाएं रखने के विचार से रामायण और गीता पढ़ने का आह्वान किया। बी0 के0 मित्रा, भगवान व जगन्नाथ के चित्र हिन्दू धार्मिक ग्रन्थ रामायण, गीता व महाभारत के प्रसंगों पर आधारित कथानक चित्र थे। इनके चित्रों ने भारतीय जन मानस में रामायण, गीता व महाभारत के पात्रों को प्राण प्रदान करने का कार्य किया। यही कारण रहा कि जन साधारण के मानस पटल पर इनके चित्रों का प्रभाव इतना अधिक पड़ा कि अब ये चित्र जन–साधारण के आस्था का विषय हो गया। इन चित्रों को पवित्र आदर्श के रूप में देखा जाने लगा तथा इन चित्रों की पूजा तक किया जाने लगी। लोगों में अपने–अपने धार्मिक आख्यानों के प्रति गहरी श्रद्धा जागृत हो गई। इसका प्रतिफलन ये हुआ कि अब जन मानस में अपने देश के प्रति प्रेम, अपनी सभ्यता और संस्कृति के प्रति सम्मान बढ़ने लगा था। जन मानस में धर्म के प्रति उनके विष्वास को सुदृढ़ किया। इन चित्रकारों ने धन अर्जन के लिए नहीं बल्कि प्रभु का शौर्य और पराक्रम स्पष्ट परिलक्षित करने के लिए कार्य किया। निश्चित ही जहॉ एक ओर गीता–प्रेस के साहित्य ने जन–मानस में धार्मिक विश्वास को सुदृढ़ किया वहीं इन चित्रकारों ने अपने चित्रों में अपनी कल्पना के बल पर समस्त साहित्य के दृष्टान्तों को दृष्यात्मक रूप प्रदान किया। इन चित्रकारों की शैली में वे सारे तत्व समाहित हैं जो भारतीय कला की विशेषता रही है जिसे पुनः स्थापित करने के उद्देश्य से भारतीय कला के पुनर्जागरण की शुरूआत हुई थी। गीता–प्रेस के कलाकारों की कृतियों में रेखा की लयात्मकता उच्च स्तर की है। चित्र संयोजन में कला के प्रत्येक तत्वों को प्रभावी रूप से प्रयोग किया गया है। इन चित्रों के संयोजन अद्वितीय है।

भले ही इन चित्रकारों के चित्र पुनरूत्थान काल के समवर्धक की दृष्टि से कम देखे जाते हो, पर इनके चित्रों को न केवल राष्ट्रीय बल्कि अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर सदैव हिन्दू भारत के निर्माण के योगदान में सर्वोत्तम दृष्टि से देखे जायेंगे। इन चित्रकारों के योगदान को निश्चित ही सदैव याद रखा जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अक्षय, मुकुलः गीता प्रेस और हिन्दू भारत का निर्माण" इलाहाबाद, HarperCollins publication india Ltd., 2015.
2. Lokesh Chandra Sharma: "A Brief History of Indian Painting" Meerut, Krishna Prakashan Media (P) Ltd.,2006.
3. किरण, प्रदीपः कला दर्शन एवं आधुनिक भारतीय चित्रकला मेरठ, कृष्ण प्रकाशन मीडिया प्रा0 लि0, 2018.

*****